International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 14 Issue 07, July 2024,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081 UGC Approved Journal Number: 48887
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

भारतीय संस्कृति में नैतिक मूल्यों का महत्व

वरुण कुमार सिंह, शोधार्थी
उच्च माध्यमिक शिक्षक ,समाजशास्त्र एवं शोधार्थी
बरकतुल्लाह विश्वविद्यालय समाजशास्त्र एवं समाज कार्य विभाग भोपाल।

प्रोफेसर डॉक्टर शैलजा दुबे, शोध निर्देशिका
समाजशास्त्र एवं समाज कार्य विभाग प्रमुख
उच्च शिक्षा उत्कृष्टता संस्थान भोपाल मध्य प्रदेश

सारांश

भारतीय संस्कृति, विश्व की प्राचीनतम और समृद्धतम संस्कृतियों में से एक है, जो अपने विविधता, सहिष्णुता, और नैतिक मूल्यों के लिए जानी जाती है। यह संस्कृति न केवल मानव जीवन को आदर्श और सार्थक बनाने का प्रयास करती है, बल्कि विश्व को एक आदर्श समाज की दिशा में प्रेरित करती है। नैतिक मूल्य भारतीय संस्कृति का आधारभूत अंग हैं और इनका महत्व व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के निर्माण में अनन्य है।

मुख्य शब्द - भारतीय संस्कृति,नैतिक मूल्य, ईमानदारी,न्याय , कर्तव्य निष्ठा आदि।

उद्देश्य -

1आम जन मानस को नैतिक मूल्यों के महत्व से परिचित करवाना।

2 इस भौतिकवादी युग में नैतिक मूल्यों की प्रासंगिकता का और अधिक बढ़ जाना।

3 पश्चिम के प्रभाव से नैतिक मूल्यों में आ रही कमी पर चिंता और चिंतन करना और नैतिक मूल्यों को बनाए रखना।

अध्ययन विधि - साक्षात्कार और अवलोकन विधि का प्रयोग।

नैतिक मूल्यों का अर्थ

नैतिक मूल्य ऐसे आदर्श और सिद्धांत हैं, जो व्यक्ति के आचरण और जीवन की दिशा और दशा तय करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ये मूल्य सत्य, अहिंसा, करुणा, दया,

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 14 Issue 07, July 2024,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081 UGC Approved Journal Number: 48887
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

न्याय, ईमानदारी, सहिष्णुता, और पारस्परिक प्रेम पर आधारित होते हैं। भारतीय संस्कृति में इन मूल्यों को धर्म, दर्शन और जीवनशैली के माध्यम से पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित किया गया है।

भारतीय संस्कृति में नैतिक मूल्यों की भूमिका

1. *धार्मिक ग्रंथों में नैतिक मूल्यों की स्थापना*

भारतीय संस्कृति में नैतिक मूल्यों को धार्मिक ग्रंथों में विशेष स्थान प्रदान किया गया है।

- *वेद और उपनिषद*: वेदों में सत्य और धर्म को परम मूल्य माना गया है। उपनिषदों में आत्मा और परमात्मा के संबंध में गहन दर्शन के साथ नैतिक जीवन जीने की प्रेरणा दी गई है।

- *महाभारत और रामायण*: महाभारत में धर्म के पालन और सत्यनिष्ठा का उदाहरण दिया गया है। रामायण में भगवान राम को आदर्श पुरुष के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जो मर्यादा, सत्य और कर्तव्यनिष्ठा के साक्षात प्रतीक हैं।

- *भगवद्गीता*: गीता में कर्मयोग और निःस्वार्थ सेवा का महत्व बताया गया है। इसमें स्पष्ट रूप से कहा गया है कि नैतिकता और धर्म का पालन मनुष्य का प्रमुख कर्तव्य है।

2. *योग और ध्यान*

भारतीय संस्कृति में योग और ध्यान नैतिक मूल्यों को आत्मसात करने के साधन हैं। योग के यम-नियम जैसे सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह नैतिक जीवन का आधार हैं। ध्यान व्यक्ति को आत्मचिंतन और आत्म परीक्षण की ओर प्रेरित करता है।

3. *गुरु-शिष्य परंपरा*

भारतीय समाज में गुरु-शिष्य परंपरा नैतिक मूल्यों के हस्तांतरण का प्रमुख माध्यम रही है। गुरुकुल प्रणाली में विद्यार्थियों को न केवल विद्या, बल्कि नैतिकता, कर्तव्यनिष्ठा और समाजसेवा का पाठ भी पढ़ाया जाता था। अर्जुन और द्रोणाचार्य की गुरु शिष्य परंपरा सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 14 Issue 07, July 2024,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081 UGC Approved Journal Number: 48887
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

नैतिक मूल्यों का सामाजिक महत्व

1. *व्यक्तिगत विकास*

नैतिक मूल्य व्यक्ति के चरित्र निर्माण में सहायक होते हैं। सत्य, ईमानदारी और सहिष्णुता जैसे मूल्य व्यक्ति को एक आदर्श इंसान बनने की दिशा में कार्य करते हैं।

2. *पारिवारिक जीवन में स्थिरता*

भारतीय संस्कृति में परिवार को समाज की आधारशिला माना गया है। नैतिक मूल्यों के बिना पारिवारिक जीवन में प्रेम, सहानुभूति और एकता की स्थापना संभव नहीं है। आज भी हिन्दू संस्कृति में तलाक यदाकदा ही होते हैं।

3. *समाज में शांति और सद्भाव*

नैतिक मूल्य जैसे अहिंसा, सहिष्णुता, और भाईचारा समाज में शांति और सामंजस्य बनाए रखने में सहायक होते हैं। भारतीय समाज विभिन्न धर्मों, भाषाओं और संस्कृतियों का संगम है, और नैतिक मूल्य इसे एकता के सूत्र में पिरोते हैं। आज नैतिक मूल्यों की उत्कृष्टता के कारण ही हम अलग-अलग धर्म के होने के बावजूद भी एक दूसरे के त्योहार और उत्सव में सहभागिता करते हैं इसका प्रत्यक्ष उदाहरण गुना में भी देखा गया है जिसमें राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के पथ संचलन में मुस्लिम धर्म के लोगों द्वारा भी फूलों की वर्षा की जाती है।

4. *राष्ट्र निर्माण में योगदान*

नैतिक मूल्य राष्ट्र की समृद्धि और विकास के लिए अनिवार्य हैं। ईमानदारी, कर्तव्यनिष्ठा और परिश्रम जैसे मूल्य किसी भी देश के नागरिकों को आदर्श बनाते हैं और देश को प्रगति की ओर ले जाते हैं। गुना जिले में कोरोना काल में लोगों ने अपनी जान जोखिम में डालकर एक दूसरे की भरपूर मदद की है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 14 Issue 07, July 2024,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081 UGC Approved Journal Number: 48887
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

भारतीय संस्कृति में नैतिक मूल्यों का व्यावहारिक पक्ष

1. *लोकाचार और पर्व-त्योहार*

भारतीय पर्व-त्योहार जैसे दिवाली, होली, रक्षाबंधन और ईद, नैतिक मूल्यों का प्रचार-प्रसार करते हैं। ये पर्व प्रेम, सौहार्द, और एकता को बढ़ावा देते हैं। गुना जिले में जहां माता की मूर्तियों का निर्माण अधिकांश मुस्लिम करते हैं वहीं हिन्दू माता रानी का दरबार लगाते हैं जो समरसता का महत्वपूर्ण उदाहरण है।

2. *अतिथि देवो भव*

भारतीय संस्कृति में अतिथि को देवता के समान माना गया है। यह मूल्य न केवल आदर और सत्कार का प्रतीक है, बल्कि मानवता के प्रति आदर का भाव भी प्रकट करता है। आज वृंदावन में अंग्रेजों को राधे राधे की भक्ति करते आसानी से देख सकते हैं क्योंकि हम भारतीयों ने उन्हें मान सम्मान के साथ साथ पूरा समर्थन दिया है।

3. *सह-अस्तित्व का आदर्श*

भारतीय समाज में सह-अस्तित्व का सिद्धांत नैतिक मूल्यों का उत्कृष्ट उदाहरण है। यह विभिन्न जातियों, धर्मों और संस्कृतियों को साथ लेकर चलने की शिक्षा देता है। जो सच्चे अर्थों में विभिन्न अवसरों पर देखा जा सकता है

4. *वसुधैव कुटुंबकम*

"वसुधैव कुटुंबकम" का सिद्धांत भारतीय संस्कृति का सार है। यह पूरे विश्व को एक परिवार मानने की शिक्षा देता है और मानवता को नैतिक मूल्यों के आधार पर जोड़ता है। कोरोना कल में हमारे प्रधानमंत्री जी ने वैक्सीन को न केवल भारत के लिए बल्कि भारत से बाहर अन्य देशों को भी निर्यात किया और जान बचाने में मदद की।

नैतिक मूल्यों का ह्रास और उसकी चुनौतियाँ

आधुनिक युग में भारतीय समाज में नैतिक मूल्यों का ह्रास देखा जा रहा है। भौतिकवाद, प्रतिस्पर्धा, और पश्चिमी प्रभाव के कारण नैतिकता का महत्व कम होता जा रहा है। भ्रष्टाचार,

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 14 Issue 07, July 2024,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081 UGC Approved Journal Number: 48887
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

असत्य, हिंसा, और सामाजिक असमानता जैसी समस्याएँ नैतिक मूल्यों की कमी को उजागर करती हैं।

1. *पारिवारिक बंधन का कमजोर होना*

संयुक्त परिवारों की जगह एकल परिवारों ने ले ली है, जिससे पारिवारिक मूल्यों और परंपराओं का ह्रास हो रहा है और संयुक्त परिवार टूट रहे हैं।

2. *भौतिकवादी सोच का प्रभाव*

आज के समाज में भौतिक सुख-सुविधाओं को नैतिकता और मूल्यों से अधिक महत्व दिया जा रहा है। जो किसी भी स्थिति में उचित नहीं है।

3. *शिक्षा प्रणाली में नैतिक शिक्षा की कमी*

वर्तमान शिक्षा प्रणाली में नैतिक शिक्षा का अभाव है। केवल अकादमिक ज्ञान पर जोर देने से नैतिक मूल्यों की अनदेखी हो रही है। हालांकि वर्तमान में भारत की शिक्षा नीति 2020 में नैतिक मूल्यों पर और भारतीय ज्ञान परंपरा पर बल दिया गया है।

नैतिक मूल्यों के पुनर्स्थापन के उपाय

1. *शिक्षा में नैतिकता का समावेश*

शिक्षा प्रणाली में नैतिक शिक्षा को अनिवार्य किया जाना चाहिए। बच्चों को प्रारंभ से ही सत्य, ईमानदारी, और सेवा भाव की शिक्षा दी जानी चाहिए।जैसे सरस्वती शिशु मंदिर इस दिशा में सार्थक पहल कर रहे हैं।

2. *परिवार और समाज की भूमिका*

परिवार और समाज को बच्चों को नैतिक मूल्यों का पालन करने के लिए प्रेरित करना चाहिए। माता-पिता और बुजुर्गों का व्यवहार बच्चों के लिए आदर्श बन सकता है।

3. *धार्मिक और सांस्कृतिक गतिविधियाँ*

धार्मिक और सांस्कृतिक आयोजनों के माध्यम से नैतिक मूल्यों का प्रचार-प्रसार किया जा सकता है। जैसे रामायण पाठ, सुंदरकांड का पाठ आदि।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 14 Issue 07, July 2024,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081 UGC Approved Journal Number: 48887
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

**4. *मीडिया और प्रौद्योगिकी का सकारात्मक उपयोग*

मीडिया और प्रौद्योगिकी को नैतिकता और समाज कल्याण के लिए उपयोग किया जाना चाहिए। सकारात्मक सामग्री का प्रसार नैतिक मूल्यों को पुनर्स्थापित कर सकता है। जैसे ज्ञानवर्धक कहानियां आदि।

निष्कर्ष

भारतीय संस्कृति में नैतिक मूल्यों का अत्यधिक महत्व है। ये मूल्य न केवल व्यक्ति के आचरण को परिष्कृत करते हैं, बल्कि समाज और राष्ट्र को एकजुट और समृद्ध बनाने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करते हैं। हालांकि आधुनिक समय में इन मूल्यों के क्षय का खतरा बढ़ता जा रहा है, फिर भी सही प्रयासों और जागरूकता के माध्यम से इन्हें पुनर्जीवित किया जा सकता है। भारतीय संस्कृति की विशेषता यह है कि वह समय के साथ बदलते हुए भी अपनी मूल जड़ों और नैतिक मूल्यों को सुरक्षित रखने में सक्षम रही है। अतः, नैतिक मूल्यों का पालन करके ही हम एक आदर्श समाज और राष्ट्र की कल्पना को साकार कर सकते हैं। इस दिशा में हमें व्यक्ति, परिवार, समाज ,स्वयंसेवी संगठनों और उच्च आदर्श मंडलों का सहयोग लेकर आगे आना पड़ेगा तभी हम भारतीय संस्कृति के नैतिक मूल्यों की ध्वज पताका पूरे विश्व पर लहरा पाएंगे।

सन्दर्भ सूची--

1भारतीय समाज मध्य प्रदेश हिंदी ग्रन्थ अकादमी।

2 भारतीय समाज NCERT

3 मध्य प्रदेश जनसंपर्क विभाग की वेबसाइट।

4 मध्य प्रदेश शासन की संस्कृति विभाग की वेबसाइट।

5 पाञ्चजन्य पत्रिका।

6 दैनिक भास्कर,पत्रिका, स्वदेश आदि समाचार पत्र पत्रिकाएं।